
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
AIDON
BATCH
CLASS 12th | HISTORY
राजा, किसान और नगर
Chapter-2 | Part-8
आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. से 600 ई.)

आज क्या पढेंगे ?

1. उपमहाद्वीप और उसके बाहर का व्यापार
2. मालाबार तट (आधुनिक केरल)
3. सिक्के और राजा
4. ब्राह्मी लिपि का अध्ययन
5. अभिलेख साक्ष्य की सीमा



निर्यात ↑
आयात ↓

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



उपमहाद्वीप और उसके बाहर का व्यापार :–

- छठी शताब्दी ई.पू. से ही उपमहाद्वीप में नदी मार्गों और भूमार्गों का जाल बिछ गया था और कई दिशाओं में फैल गया था।
- मध्य एशिया और उससे भी आगे तक भू–मार्ग थे।
- समुद्रतट पर बने कई बंदरगाहों से जलमार्ग मुख्य रूप से 2 बन गये थे –

1. अरब सागर से होते हुए, उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम एशिया तक फैल गया।
2. बंगाल की खाड़ी से यह मार्ग चीन और दक्षिणपूर्व एशिया तक फैल गया था।

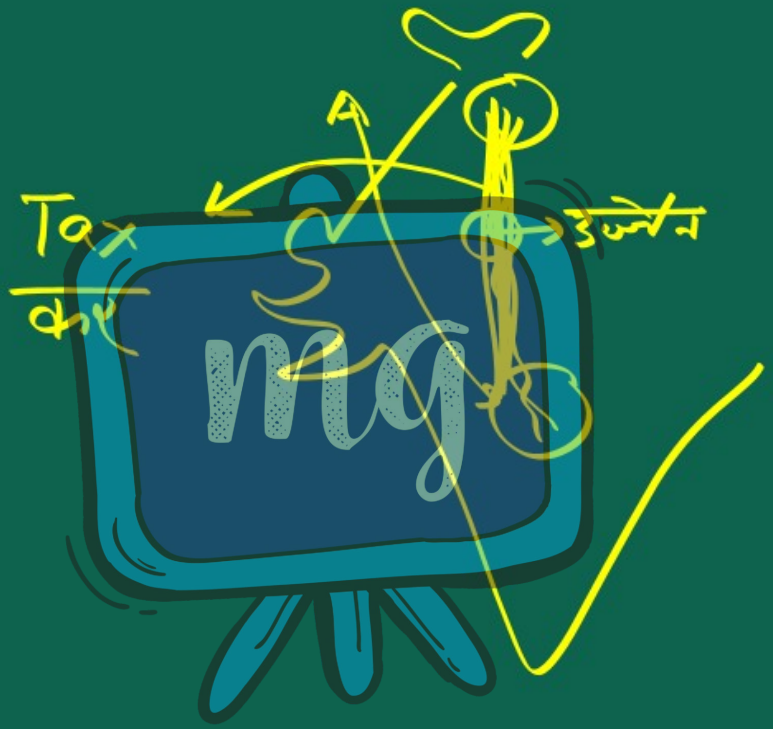
Tax
कर
उत्पादन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

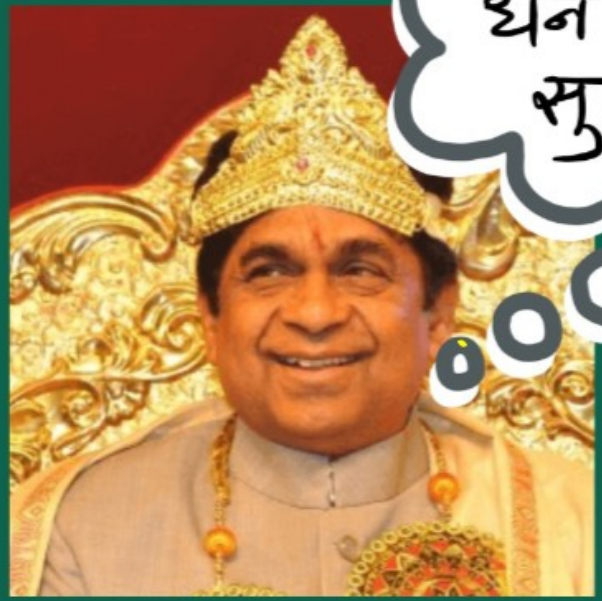

- शासकों ने प्रायः इन मार्गों पर नियंत्रण करने की कोशिश की और संभवतः वे इन मार्गों पर व्यापारियों की सुरक्षा के बदले उनसे धन लेते थे।
- इन मार्गों पर चलने वाले व्यापारियों में पैदल फेरी लगाने वाले व्यापारी तथा बैलगाड़ी और घोड़े-खच्चरों जैसे जानवरों के दल के साथ चलने वाले व्यापारी होते थे।
- समुद्री मार्ग से भी लोग यात्रा करते थे जो खतरनाक तो थी, लेकिन बहुत लाभदायक भी होती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





- तमिल भाषा में मसत्थुवन और प्राकृत में सत्थवाह और सेट्ठी के नाम से प्रसिद्ध सफल व्यापारी बड़े धनी हो जाते थे।
- नमक, अनाज, कपड़ा, धातु और उससे निर्मित उत्पाद, पत्थर, लकड़ी, जड़ी–बूटी जैसे अनेक प्रकार के सामान एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाए जाते थे।
- रोमन साम्राज्य में काली मिर्च, जैसे मसालों तथा कपड़ों व जड़ी–बूटियों की भारी माँग थी।
- इन सभी वस्तुओं को अरब सागर के रास्ते भूमध्य क्षेत्र तक पहुँचाया था।

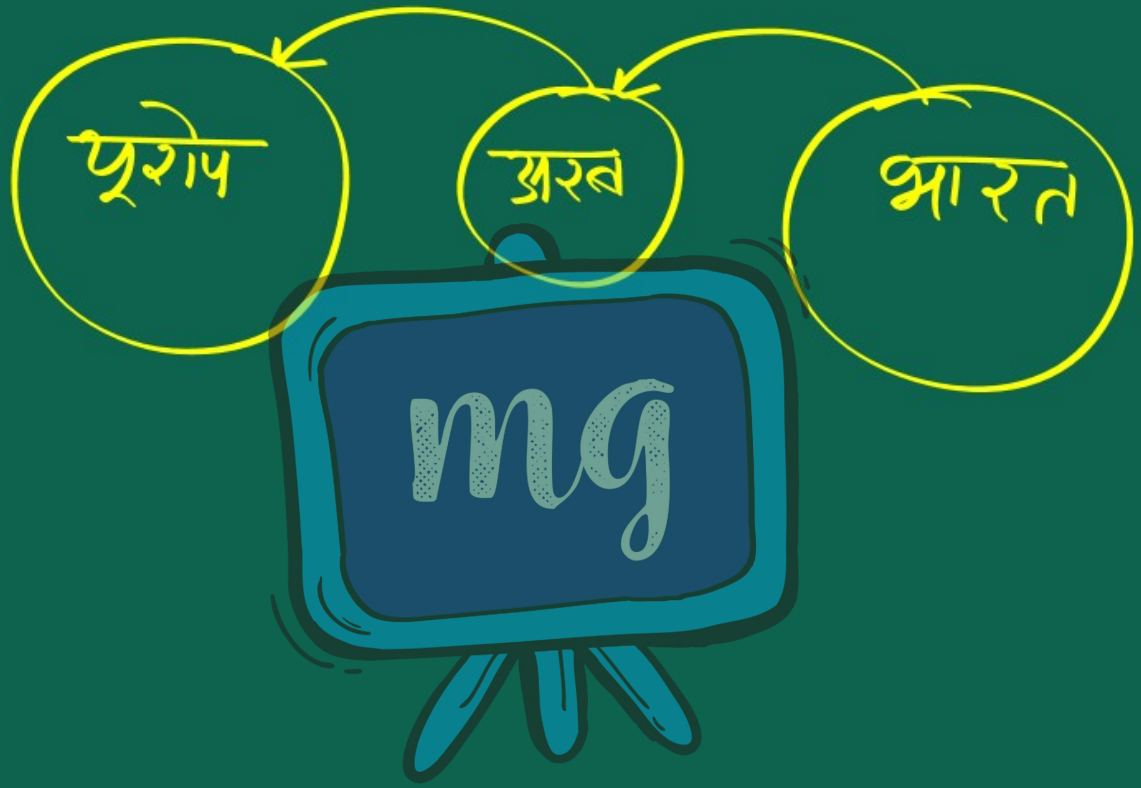
यूरोप
अरब
भारत
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. भारत किन वस्तुओं का निर्यात करता था?

Q. उपमहाद्वीप में किस प्रकार व्यापारिक मार्गों का जाल फैल गया था?

Q. शासक व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण। क्यों करते थे?

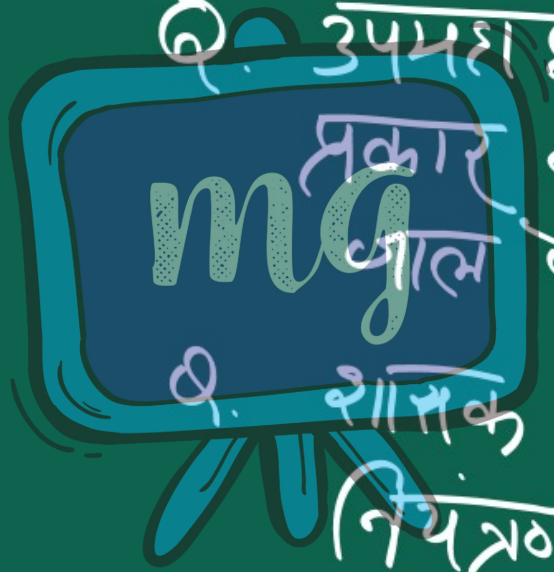

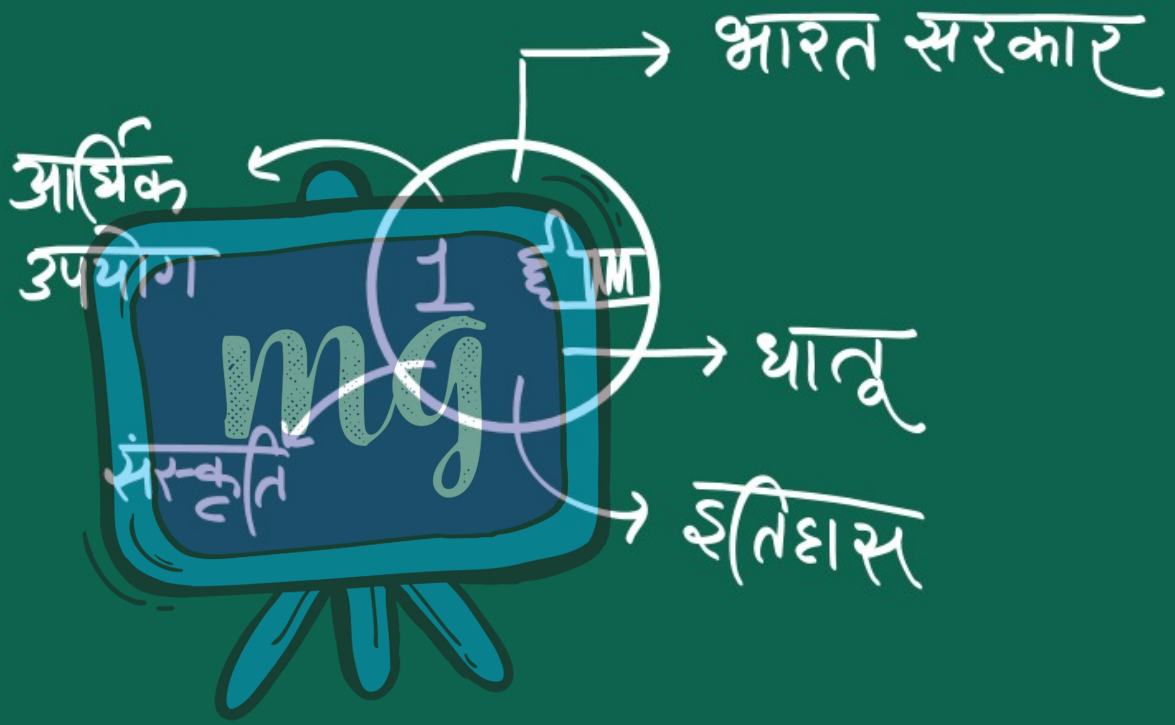
भारत सरकार
आर्थिक उपयोग
धातु
संस्कृति
इतिहास

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सिक्के और राजा :–

व्यापार के लिए सिक्के के प्रचलन से विनिमय कुछ हद तक आसान हो गया था।

चाँदी और ताँबे के आहत सिक्के (छठी शताब्दी ई.पू.) सबसे पहले ढाले गए और प्रयोग में आए। पूरे उपमहाद्वीप में खुदाई के दौरान इस प्रकार के सिक्के मिले हैं।

आहत सिक्के – धातु के टुकड़े पर चिन्ह विशेष ठप्पा मारकर बनाये जाते थे। इन पर प्रतीकों को आहत किया जाता था।



आहत शब्द से ही स्पष्ट है कि इन सिक्कों पर प्रतीकों को आहत कर उन्हें बनाया जाता था

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मैं हूँ मुद्राशास्त्री



मुद्राशास्त्रियों ने इनका और अन्य सिक्कों का अध्ययन करके उनके वाणिज्यिक प्रयोग के संभावित क्षेत्रों का पता लगाया है।

मुद्राशास्त्र – इसमें सिक्कों का अध्ययन होता है। इसके साथ ही उन पर पाये जाने वाले चित्र, लिपि आदि तथा उनकी धातु का विश्लेषण और जिन संदर्भ में इन सिक्कों को पाया गया है। उनका अध्ययन भी इसमें आता है।

आहत सिक्के पर बने प्रतीकों को उन विशेष मौर्य वंश जैसे राजवंशों के प्रतीकों से मिलाकर पहचान करने की कोशिश की गई तो पता चला कि इन सिक्कों को राजाओं ने जारी किया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- यह भी संभव है कि व्यापारियों, धनपतियों और नागरिकों ने इस प्रकार के कुछ सिक्के जारी किए हों।
- शासकों की प्रतिमा और नाम के साथ सबसे पहले सिक्के हिंदु–यूनानी शासकों ने जारी किए थे जिन्होंने द्वितीय शताब्दी ई.पू. में उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- सोने के सिक्के बड़े पैमाने पर प्रथम शताब्दी ई. में कुषाण राजाओं ने जारी किए थे। इनके आकार और वजन तत्कालीन रोमन सम्राटों तथा ईरान के पार्थियन शासकों द्वारा जारी सिक्कों के बिल्कुल समान थे। उत्तर और मध्य भारत के कई पुरास्थलों पर ऐसे सिक्के मिले हैं।
- सोने के सिक्कों के व्यापक प्रयोग से संकेत मिलता है कि बहुमूल्य वस्तुओं और भारी मात्रा में वस्तुओं का विनिमय किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- दक्षिण भारत के अनेक पुरास्थलों से बड़ी संख्या में रोमन सिक्के मिले हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि व्यापारिक तंत्र राजनीतिक सीमाओं से बँधा नहीं था, क्योंकि दक्षिण भारत रोमन साम्राज्य के अंतर्गत न होते हुए भी व्यापारिक दृष्टि से रोमन साम्राज्य से संबंधित था।
- पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों के यौधेय कबायली गणराज्यों (प्रथम शताब्दी ई.) ने सिक्के जारी किए थे। पुराविदों को इन शासकों द्वारा जारी ताँबे के सिक्के हजारों की संख्या में मिले हैं जो यौधेयों की व्यापार में रुचि और सहभागिता परिलक्षित होती है।



एक यौधेय सिक्का

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सोने के भव्य सिक्कों में से कुछ गुप्त शासकों ने जारी किए। इनके आरंभिक सिक्कों में प्रयुक्त सोना अति उत्तम था। इन सिक्कों के माध्यम से दूर देशों से व्यापार–विनिमय करने में आसानी होती थी जिससे शासकों को भी लाभ होता था।



एक गुप्त सिक्का

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- छठी शताब्दी ई. से सोने के सिक्के मिलने कम हो गए। संभवतः उस काल में कुछ आर्थिक संकट पैदा हो गया हो।
- कुछ का मानना है कि रोमन साम्राज्य के पतन के बाद दूरवर्ती व्यापार में कमी आई जिससे उन राज्यों, समुदायों और क्षेत्रों की संपन्नता पर असर पड़ा जिन्हें दूरवर्ती व्यापार से लाभ मिलता था।
- अन्य का कहना है, कि नगरों के साथ–साथ व्यापार के नवीन तंत्रों का उदय होने लगा था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके बाद भी अभिलेखों और ग्रंथों में सिक्के का उल्लेख होना दर्शाता है कि सिक्के मिलने कम इसलिए हो गये है कि वो प्रचलन में तो थे परन्तु उनका किसी ने संग्रह करके नहीं रखा था।




योधेय
कबीले
mg

Q. आहत सिक्के किसे कहा जाता है और वे कब प्रचलन में आए थे?

Q. मुद्राशास्त्र व मुद्राशास्त्री

Q. किसने सबसे पहले सोने के सिक्के चलवाए?

Q. भारत में रोमन सिक्कों का पतन क्यों हुआ?

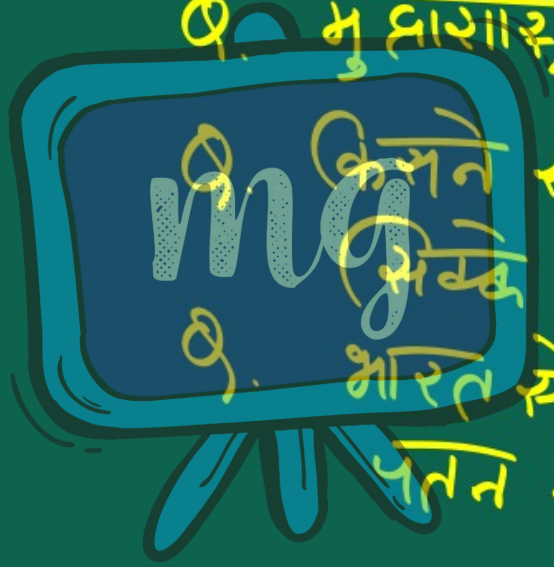

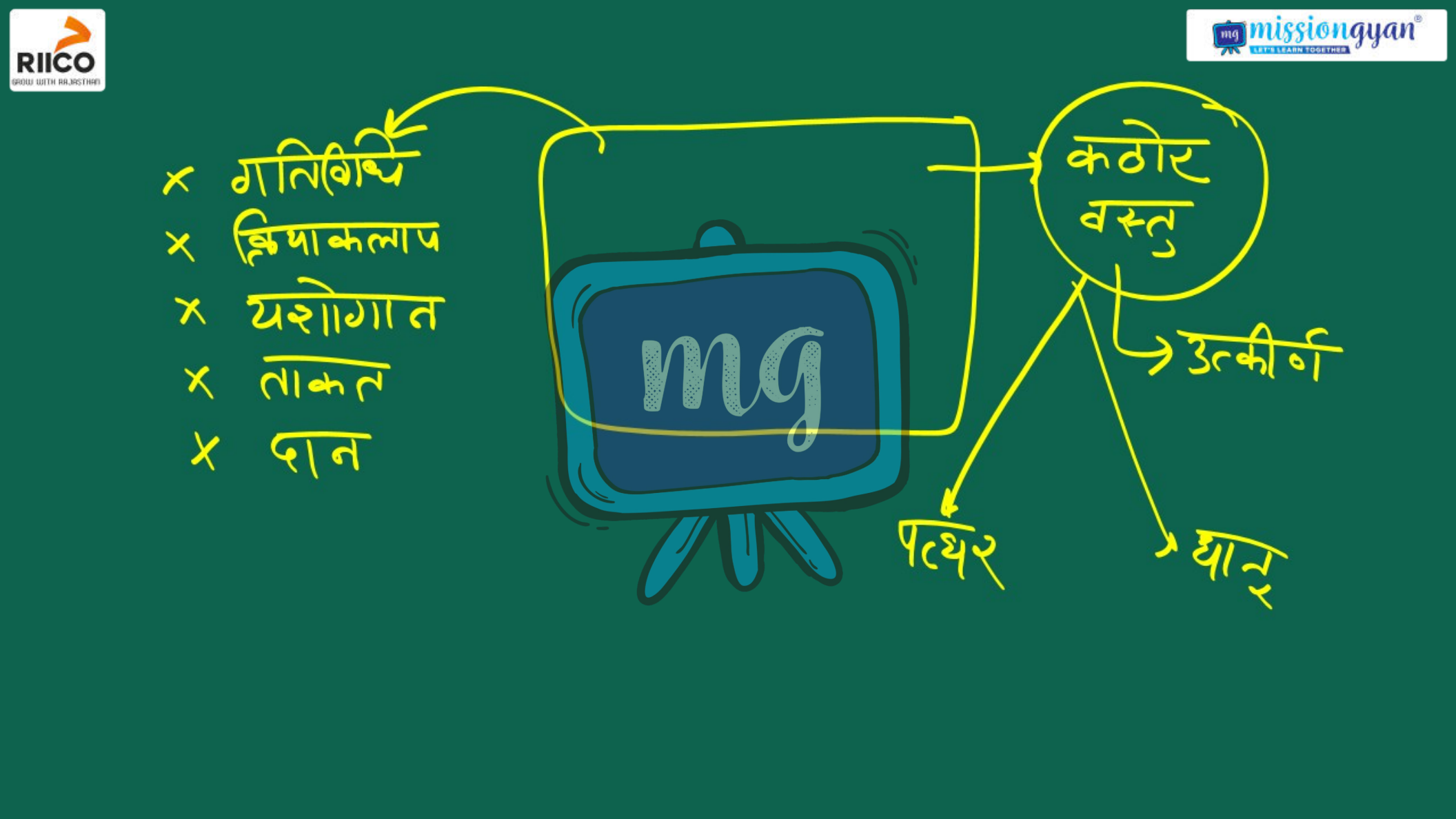
गतिविधि
क्रियाकलाप
यशोगात
ताकत
दान
कठोर वस्तु
उत्कीर्ण
पत्थर
धातु



अभिलेखों का अर्थ कैसे निकाला जाता है?

- ब्राह्मी लिपि द्वारा खरोष्ठी लिपि का अध्ययन कर अभिलेखों का अर्थ निकाला गया।

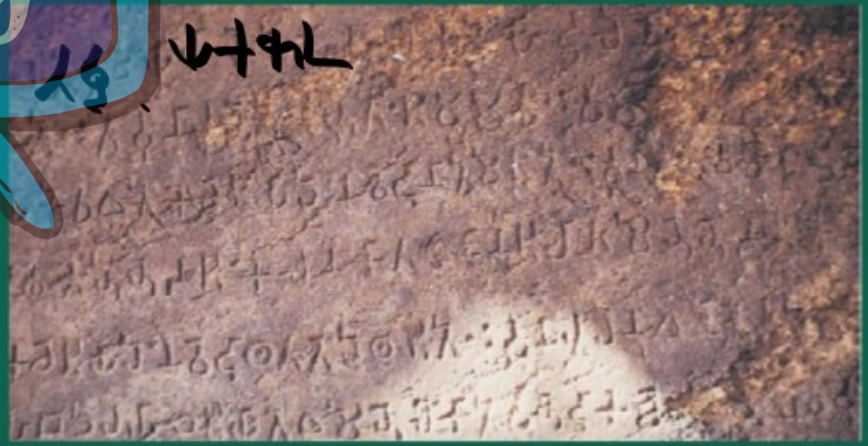

असोक का एक अभिलेख

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ख ख

ब्राह्मी लिपि का अध्ययन –

- आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त लगभग सभी लिपियों का मूल ब्राह्मी लिपि है।
- ब्राह्मी लिपि का प्रयोग असोक के अभिलेखों में किया गया है।



𑀓	क
𑀘	च
𑀝	ढ
𑀤	द
𑁄	म
𑀭	र

ब्राह्मी और उसके समानार्थी देवनागरी अक्षर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

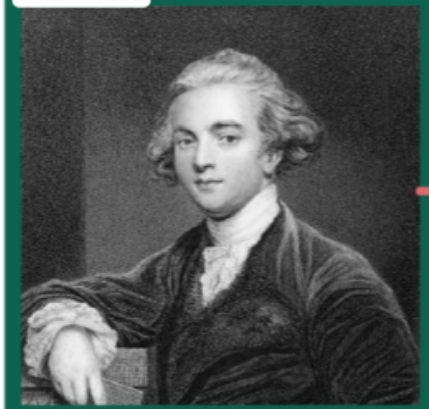





- 18वीं सदी से यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय पंडितों की सहायता से आधुनिक बंगाली और देवनागरी लिपि में कई पांडुलिपियों का अध्ययन शुरू किया और उनके अक्षरों की प्राचीन अक्षरों के नमूनों से तुलना शुरू की।
- आरंभिक अभिलेखों का अध्ययन से विद्वानों को कई बार लगा कि ये संस्कृत में लिखे हैं जबकि प्राचीनतम अभिलेख वस्तुतः प्राकृत में थे।
- कई दशकों बाद जेम्स प्रिंसेप ने असोककालीन ब्राह्मी लिपि का 1838 ई. में अर्थ निकाल लिया।


अभिलेख
दान
mg
संस्कृत
तुलना
अभिलेख

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

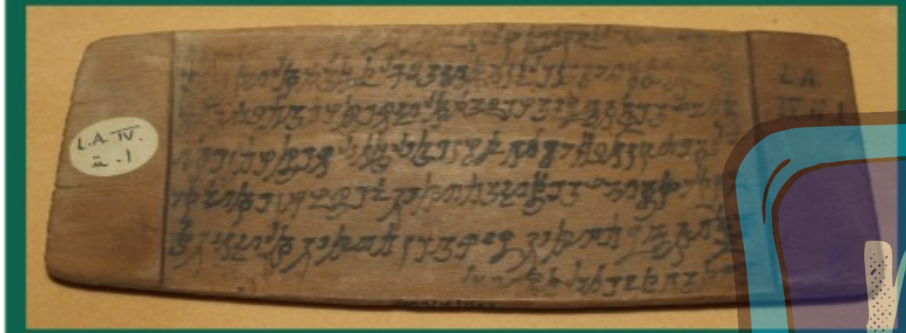

Q. जेम्स प्रिंसेप कौन थे? इतिहास लेखन में उनका क्या योगदान रहा?

Q.

खरोष्ठी लिपि को कैसे पढ़ा गया?

- पश्चिमोत्तर के अभिलेखों में प्रयुक्त खरोष्ठी लिपि के पढ़े जाने की कहानी अलग है।
- इस क्षेत्र में शासन करने वाले हद–यूनानी राजाओं द्वारा बनवाए गए सिक्कों से जानकारी हासिल करने में आसानी हुई है।



हिन्द यूनानी शासक मेनाण्डर का एक सिक्का

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इन सिक्कों में राजाओं के नाम यूनानी और खरोष्ठी में लिखे गए हैं। यूनानी भाषा पढ़ने वाले यूरोपीय विद्वानों ने अक्षरों का मेल किया। जैसे – अपोलोडोटस के अक्षर 'अ' का मेल किया ।
- प्रिंसेप ने खरोष्ठी में लिखे अभिलेखों की भाषा की पहचान प्राकृत भाषा के रूप में की थी इसलिए लंबे अभिलेखों को पढ़ना सरल हो गया।

अभिलेखों से प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्य:

इतिहासकारों के काम करने के तरीकों का पता लगाने के लिए आइये अशोक के दो अभिलेखों को ध्यान से पढ़े।

Q. जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि को कैसे समझा?

→ रसोई



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



राजा के आदेश

राजन् देवानांपिय पियदस्सी यह कहते हैं: अतीत में मसलों को निपटाने और नियमित रूप से सूचना एकत्र करने की व्यवस्थएँ नहीं थीं। लेकिन मैंने निम्नलिखित (व्यवस्था) की हैं।

लोगों के समाचार हम तक प्रतिवेदक सदैव पहुँचाएँ। चाहे मैं कहीं भी हूँ, खाना खा रहा हूँ, अन्तःपुर में हूँ, विश्राम कक्ष में हूँ, गोशाले में हूँ, या फिर पालकी में मुझे ले जाया जा रहा हो अथवा वाटिका में हूँ। मैं लोगों के विषयों का निराकरण हर स्थल पर करूँगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इस अभिलेख में असोक का नाम नहीं लिखा है।
- इसमें असोक द्वारा अपनाई गई उपाधियों का प्रयोग किया गया है जैसे कि देवानांपिय अर्थात् देवताओं का प्रिय और 'पियदस्सी' यानी 'देखने में सुन्दर'।
- असोक नाम अन्य अभिलेखों में मिलता है जिसमें उनकी उपाधियाँ भी लिखी हैं।
- इन अभिलेखों का परीक्षण करने के बाद अभिलेखशास्त्रियों ने पता लगाया कि उनके विषय, शैली, भाषा और पुरालिपिविज्ञान सबमें समानता है, अतः ये अभिलेख एक ही शासक ने बनवाया होंगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

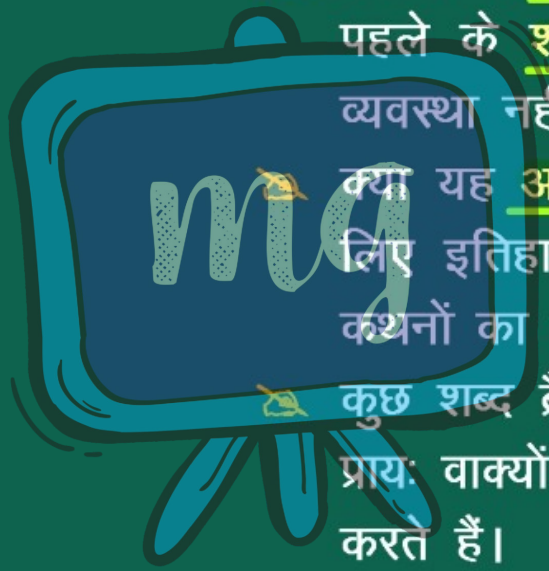

- असोक ने अपने अभिलेखों में कहा है कि उनसे पहले के शासकों ने रिपोर्ट एकत्र करने की व्यवस्था नहीं की थी।
- क्या यह असोक का वक्तव्य सही है? इसके लिए इतिहासकारों को बार–बार अभिलेखों के कथनों का परीक्षण करना पड़ता है।
- कुछ शब्द ब्रैकेट में लिखे हैं? अभिलेख शास्त्री प्रायः वाक्यों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए ऐसा करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इतिहासकार इस प्रकार परीक्षण करते हैं कि यदि राजा के आदेश यातायात मार्गों के किनारे और नगरों के पास प्राकृतिक पत्थरों पर उत्कीर्ण थे, तो क्या वहाँ से आने–जाने वाले लोग उन्हें पढ़ने के लिए रुकते थे?
- अधिकांश लोग प्रायः पढ़े–लिखे नहीं थे।
- क्या पाटलिपुत्र में प्रयुक्त प्राकृत उपमहाद्वीप में सभी स्थानों के लोग समझते थे?
- क्या राजा के आदेशों का पालन किया जाता था?
- इन प्रश्नों के उत्तर पाना सदैव कठिन हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राजा की वेदना



जब देवानांपिय पियदस्सी ने अपने शासन के आठ वर्ष पूरे किए तो उन्होंने कलिंग (आधुनिक तटवर्ती उड़ीसा) पर विजय प्राप्त की।

डेढ़ लाख पुरुषों को निष्कासित किया गया, एक लाख मारे गए और इससे भी ज्यादा की मृत्यु हुई।

कलिंग पर शासन स्थापित करने के बाद देवानांपिय धम्म के गहन अध्ययन, धम्म के स्नेह और धम्म के उपदेश में डूब गए हैं।

यही देवानांपिय के लिए कलिंग की विजय का पश्चाताप है। देवानांपिय वेफ लिए यह बहुत वेदनादायी और निंदनीय है कि जब कोई किसी राज्य पर विजय प्राप्त करता है तो पराजित राज्य का हनन होता है, वहाँ लोग मारे जाते हैं, निष्कासित किए जाते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इस अभिलेख की व्याख्या प्रायः असोक की वेदना के प्रतिबिंब के रूप में की जाती है। साथ ही यह युद्ध के प्रति उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन को भी दर्शाता है।
- यद्यपि असोक के अभिलेख आधुनिक उड़ीसा में मिले हैं लेकिन उनकी वेदना को परिलक्षित करने वाला अभिलेख वहाँ नहीं मिला है अर्थात् यह अभिलेख उस क्षेत्र में नहीं उपलब्ध है जिस पर विजय प्राप्त की गई थी।
- राजा की नव विजय की वेदना उस क्षेत्र के लिए इतनी दर्दनाक थी कि राजा इस मुद्दे पर कुछ कह न सका।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अभिलेख साक्ष्य की सीमा



- अभिलेखों से प्राप्त जानकारी की भी सीमा होती है।
- कभी-कभी इसकी तकनीकी सीमा होती है। अक्षरों को हलके ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता है।
- अभिलेख नष्ट भी हो सकते हैं जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं।
- अभिलेखों के शब्दों के वास्तविक अर्थ के बारे में पूर्ण रूप से ज्ञान हो पाना सदैव सरल नहीं होता क्योंकि कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय से संबंधित होते हैं।

- अक्षरों को हल्के से उत्कीर्ण
- नष्ट ⟶ लुप्त
- अर्थ की अस्पष्टता

- अभिलेखों के अंश
- विशेष अवसरों
- राजनीतिक - सामाजिक इतिहास का अभाव

- यद्यपि कई हजार अभिलेख प्राप्त हुए हैं लेकिन सभी के अर्थ नहीं निकाले जा सके है।
- इसके अतिरिक्त और अनेक अभिलेख रहे होंगे जो कालांतर में सुरक्षित नहीं बचे हैं। इसलिए जो अभिलेख अभी उपलब्ध हैं, वह संभवतः कुल अभिलेखों के अंश मात्र हैं।
- एक मौलिक समस्या और भी है यह अभिलेख बड़े और विशेष अवसरों का ही उल्लेख करते हैं। यह जरूरी नहीं है कि जिन्हें हम आज राजनीतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं उन्हें अभिलेखों में अंकित किया गया हो।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



उदाहरण के तौर पर – खेती की दैनिक प्रक्रियाऐं और रोजमर्रा की जिन्दगी के सुख दुख का उल्लेख अभिलेखों में नहीं है। इसके अलावा अभिलेख हमेशा उन्हीं व्यक्तियों के विचार व्यक्त करते हैं जो उन्हें बनवाते थे। अर्थात् राजनीतिक और आर्थिक इतिहास का पूर्ण ज्ञान मात्र अभिलेख शास्त्र से ही नहीं मिलता है।

19वीं सदी के आखिरी दशकों में और 20वीं सदी के प्रारंभ में इतिहासकार प्रमुख रूप से राजाओं के इतिहास में रुचि रखते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 20वीं सदी के मध्य से आर्थिक परिवर्तन, विभिन्न सामाजिक समुदायों के उदय के विषय में महत्वपूर्ण बन गए।
- हाल के वर्षों में इतिहासकारों की रुचि ऐसे समुदायों के प्रति बढ़ी है जो सामाजिक हाशिये पर हैं।
- इसके लिए प्राचीन स्त्रोतों पर पुर्नविचार करते हुए विश्लेषण की गयी विधियां विकसित होंगी।